केंद्रीय विद्यालय विजयपुर

कक्षा – ४

अध्याय – १

(मन के भोले भाले बादल)

कवि - कल्पनाथ सिंह

राहुल वर्मा द्वारा प्रस्तुत

मन के भोले भाले बादल

झब्बर झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम झूम कर काले बादल ।

कुछ जोकर-से तोंद फुलाए
कुछ हाथी-से सूंड उठाये
कुछ ऊंटों-से कूबड़ वाले
कुछ परियों-से पंख लगाये ।

आपस मे टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल ।

व्याख्या – १

कवि कहता है कि बादलों के बाल झब्बरदार हैं, उनके गाल गुब्बारे जैसे हैं। वे आसमान में दौड़ने लगे है। वे काले बादल है और झूम झूम कर इधर उधर आ जा रहे है। कवि आगे कहता है कि कुछ बादल जोकर जैसा पेट फुलाए है और कुछ हाथी जैसे सूंड उठाये है। कुछ बादलों के ऊँट जैसे कूबड़ है और कुछ के परियों जैसे पंख है । ये सभी बादल आपस में रह-रहकर टकरा रहे है ये शेरों जैसे मतवाले लगते है ।

कुछ तो लगते हैं तूफ़ानी
कुछ रह-रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी ।

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल ।

रह-रहकर छत पर आ जाते
फिर चुपके ऊपर उड़ जाते
कभी-कभी जिद्दी बन कर के
बाढ़ नदी-नालो में लाते ।

फिर भी लगते बहुत भले है
मन के भोले-भाले बादल ।

व्याख्या - २

बादलों के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि कुछ बादल बिलकुल तूफ़ान जैसे लगते है। वे रह-रहकर शैतानी रुख अपना लेते है और अपने थैलों से झर-झर-झर पानी बरसा देते है। कवि कहता है कि ये बादल कभी किसी की कुछ नहीं सुनते बस आपस में टकरा कर गर्जना मतलब जोर से आवाज़ करते रहते है। जिसे सुनकर ऐसा लगता है कि जैसे ये ढोल बजा रहे हो ये बादल कभी छत पर दिख जाते है, फिर उड़ जाते है। कभी कभी जिद्द पर अड़ जाते है और इतना पानी बरसाते है कि सभी नदी नालो में बाढ़ आ जाती है। कवि कहता है कि इन सबके बावजूद ये बादल बहुत अच्छे है ये मन के भोले भाले है।

शब्द अर्थ

१. तोंद – मोटा पेट

२. मतवाले – मनमौजी

३. तूफ़ानी – तूफ़ान की तरह

४. जिद्दी - हठी

५. भले – अच्छे

६. भोले भाले – जो किसी से कोई छल या धोखा नहीं करता

७. कूबड़ – उभरी हुई पीठ

इस अध्याय से सम्बंधित विडियो देखने के लिए दिए गये लिंक पर क्लिक करें:

HTTPS://YOUTU.BE/_7IUCSS-AE4